रामजन्म समय के सांयोगिक विधिविधान और उसमे से प्राप्त संदेश

प्रा। डॉ। राकेश कुमार पटेल

Children's Research University, Gandhinagar, Gujarat

प्रस्तावना -

इस संशोधन पत्रमे मुख्य रूप से राम के जन्म पूर्व के संयोग की और उस संयोग से राम जैसे महामानव का जन्म कैसे हुआ चर्चा की गई है। श्री राम के बाल्यकाल और युवावस्था के कालमे जो समयकाल जहां उन्होंने अभ्यास, पराक्रमशीलता , जीवन रीति आदि के बारे मे बताया गया है। हमारे यहाँ एक परंपरा ऐसी है की विवाह के बाद जन्म लेने वाला संतान कैसा होना चाहिए ? उसके बारे मे आयुर्वेद और की ग्रंथोंमे चर्चा हुई है। जीसे हम गर्भविज्ञान या १६ संस्कार के रूपमे जानते है। राम का जीवन का प्रथम प्रादुर्भाव उनके जन्म के पूर्व दशरथ , ऋश्यशृंग ऋषि, ब्रह्माजी और की देवताओने निश्चित किया था। दूसरी तरह सोचे तो उस समय की मांग थी की राम जैसा कोई नरपुंगव जन्म ले और पृथ्वी को नरपिशाचों से बचाए। और सभी प्रकारकी जातिओ के लोगों से समानता और समादर करे।

राम का जन्म रावण जैसे महाआतंकी राक्षस को मारने के लिए हुआ था। क्योंकी रावण ने ब्रह्माजी से वरदान लिया था की मुजे देव, दानव , राक्षस या गंधर्व कोई नहीं मार सकेगा। केवल मानव को छोड़ दिया था क्योंकी वो मानव जाती से बिलकूल नहीं डरता था। दशरथ के अश्वमेध यज्ञ मे पधारे सभी महेमानों मे देवगण और गंधर्व आदि भी थे। यज्ञ के दरमियान हुई चर्चा मे सभी देवगणों ने एक स्वरमे ब्रह्माजी से कहा की आप कोई ऐसा उपाय कीजिए की रावण का अंत हो जाए। तब विष्णु के सहयोग से परमावतार रूप राम मे वो सभी शक्तियां और खूबीयां होगी जो की रावण का नाश कर सके।

संसार की विभिन्न भाषाओं में जो उच्चकोटि के महाकाव्य हैं उनमें महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण का स्थान सर्वोच्च है। संसार के अन्य काव्यों में हमें महाकाव्य की अन्य विशेषताएँ भले ही मिल जाएँ, परन्तु श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में जिस आस्तिकता, धार्मिकता, प्रभुभक्ति, उदात्त एवं दिव्य भावनाओं और उच्च नैतिक आदर्शों का वर्णन मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

राम स्वयं समाज पुरुषोत्तम थे, ये बात सर्व विदित है। मगर एक मनुष्य के रुप मे भी राम देखेङ्गे तो लगेगा की राम समाज को अपने बचपनकाल से हि समाजको मार्गदर्शन मिले ऐसा जीवन जी गये है। राम के जन्म से पहले हुइ पाँच पीढी मे भी समाज हितवर्धक और गुणानुरागी पुरुष हुए थे।

चाबीरूप शब्द- राम, दशरथ , ऋष्यश्रृंग, अश्वमेध यज्ञ , पवित्र पायस, राक्षसोंका संहार , शिक्षा , ज्ञान

रामजन्म की प्रेरक आख्यायिका

पुत्र प्राप्ति हेतु अयोध्या में मुनिवर ऋष्यश्रृंग के आने से महाराजा दशरथ का अश्वमेध यज्ञ यथाविधि पूर्ण होने में वसिष्ठ के मन में अब कोई किंतु परंतु नहीं रहा। तपोवन में रहनेवाले तपस्वियों, वैदिक विद्वान् और पुरोहितों ने ऋष्यश्रृंग के निर्देशन में परिजनों और अनेक राजा-महाराजाओं की उपस्थिति में अत्यंत दुश्कर अश्वमेध यज्ञ संपन्न किया। स्वयं दशरथ तथा समस्त प्रजाजनों के आनंद का कोई ठिकाना नहीं रहा। यज्ञ संपन्न होने पर दशरथ ने ऋष्यश्रृंग से निवेदन किया-

ततोऽब्रवीद् ऋष्यश्रृंगं राजा दशरथस्तदा।
कुलस्य वर्धनं तत्तु कर्तुमर्हसि सुव्रत ! ॥ (बालकांड, सर्ग १४/५९)

अर्थात् हे सदाचरणशील ! हमारी कुलवृद्धि के लिए कारणभूत आवश्यक कार्यसंपन्न करिएगा। इस प्रकार दशरथ द्वारा मुनि ऋष्यश्रृंग से प्रार्थना किए जाने पर पुत्र मुनि ऋष्यश्रृंग ने दशरथ से कहा- ठीक है, आपके कुल की वृद्धि करनेवाले चार पुत्र होंगे ।

तथेति च स राजानमुवाच द्विजसत्तमः ।
भविष्यन्ति सुताः राजन् ! चत्वारस्ते कुत्वोद्वहाः ॥ (बालकांड, सर्ग १४/६०)

अपनी कोई पुत्र-संतति नहीं, इसलिए महाराजा दशरथ दुःखी-कष्टी थे, मन खिन्न रहता था, परंतु निराश या उदासीन नहीं थे। पुत्र-प्राप्ति के लिए उन्होंने स्वयं तपस्या की। स्वयं स्वतंत्र रूप से की गई तपस्या फलीभूत नहीं हो पाई, फिर भी अपना धैर्य ढलने नहीं दिया। सोचते-सोचते अश्वमेध यज्ञ करने की कल्पना उन्हें सूझी।

बालकाण्ड के १५ मे सर्ग मे रामजन्म के पीछे की सच्चाई कहीं गई है । ऋश्यशृंग द्वारा दशरथ के पुत्रेष्ठि यज्ञका आरंभ होता है । उस यज्ञ मे देवता, सिद्ध, गंधर्व और महर्षि गण विधिके अनुसार अपना-अपना भाग ग्रहण करनेके लिए यज्ञमे इकत्र हुए । (भाग प्रतिग्रहार्थ्म वै समवेता यथाविधि – ४/१२) उस वक्त देवताओने ब्रह्माजीसे कहने लगे की ' भगवन् ! रावण नामक राक्षस आपका कृपापरसाद पाकर अपने बलसे हम सब लोगोंको बड़ा कष्ट दे रहा है । हममें इतनी शक्ति नहीं है कि अपने पराक्रमसे उसको दबा सके । (सर्वान् नो बाधते वीर्याच्छासितुं तं न शक्नुमः ६/१५ बालकाण्ड) ये सब बाते सुनकर देवताओने कहा इस प्रकार कहा।

तन्महन्नो भयं तस्माद् राक्षसाद् घोरदर्शनात् ।
वधार्थं तस्य भगवन्नुपायं कर्तमर्हसि ॥ ११ ॥

'वह राक्षस देखनेमें भी बड़ा भयंकर है। उससे हमें महान् भय प्राप्त हो रहा है; अतः भगवन् ! उसके वधके लिये आपको कोई-न-कोई उपाय अवश्य करना चाहिये ।

एवमुक्तः सुरैः सर्वैश्चिन्तयित्वा ततोऽब्रवीत् ।
हन्तायं विदितस्तस्य वधोपायो दुरात्मनः ॥ १२ ॥
तेन गन्धर्वयक्षाणां देवतानां च रक्षसाम् ।
अवध्योऽस्मीति वागुक्ता तथेत्युक्तं च तन्मया ॥ १३ ॥

समस्त देवताओंके ऐसा कहनेपर ब्रह्माजी कुछ सोचकर बोले- 'देवताओ ! लो, उस दुरात्माके वधका उपाय मेरी समझमें आ गया। उसने वर माँगते समय यह बात कही थी कि मैं गन्धर्व, यक्ष, देवता तथा राक्षसोंके हाथसे न मारा जाऊँ। मैंने भी 'तथास्तु' कहकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली ॥ १२-१३ ॥

नाकीर्तयदवज्ञानात् तद् रक्षो मानुषांस्तदा ।
तस्मात् स मानुषाद् वध्यो मृत्युर्नान्योऽस्य विद्यते ॥ १४ ॥

'मनुष्योंको तो वह तुच्छ समझता था, इसलिये उनके प्रति अवहेलना होनेके कारण उनसे अवध्य होनेका वरदान नहीं माँगा। इसलिये अब मनुष्यके हाथसे ही वध होगा। मनुष्यके सिवा दूसरा कोई उसकी मृत्युका कारण नहीं है' ।॥ १४ ॥

एतच्छ्रुत्वा प्रियं वाक्यं ब्रह्मणा समुदाहृतम् ।
देवा महर्षयः सर्वे प्रहृष्टास्तेऽभवंस्तदा ।। १५॥

ब्रह्माजीकी कही हुई यह प्रिय बात सुनकर उस समय कर समस्त देवता और महर्षि बड़े प्रसन्न हुए ।

राम की शिक्षा

तपोगमन के दरमियान रामने वसिष्ठजी से सर्वग्राही शिक्षा प्राप्त की । यज्ञीय कार्यमे विघ्न डालने वाले राक्षसों का संहार भी उन्होंने किया । इतना ही नहीं गुरु की आज्ञा के अनुसार सभी अस्त्र-शस्त्र विद्याए प्राप्त की । अपने आप को सिद्ध बनाया और बाद मे माता- पिता की सेवा के लिए भी तत्पर बने ।

महाकाव्य रामायण के श्रद्धेय नायक श्री राम को हिंदू पौराणिक कथाओं में सदाचार, धार्मिकता और आदर्श नेतृत्व का प्रतीक माना जाता है। उनका जीवन और शिक्षाएँ एक सदाचारी और पूर्ण जीवन जीने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए एक कालातीत मार्गदर्शक प्रदान करती हैं। श्री राम द्वारा सन्निहित गुण एक आदर्श व्यक्ति के लिए एक खाका के रूप में काम करते हैं, जो व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास के लिए एक रोडमैप पेश करते हैं। आइए श्री राम के सोलह गुणों के बारे में जानें जिनका अनुकरण हर व्यक्ति कर सकता है।

कोऽन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः॥१-१-२
चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान् कः कस्समर्थश्च कैश्चैकप्रियदर्शनः॥१-१-३
आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे॥१-१-४

नारद जी कहते हैं कि इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न श्री राम में ये सभी गुण हैं।

रामायण में बाल विकास के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। रामायण के बालकांड में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के बचपन का वर्णन है। इन बालकों को कैसे शिक्षा दी गई, कैसे उनमें अच्छे संस्कारों का विकास किया गया, और कैसे उन्हें एक आदर्श राजा बनने के लिए तैयार किया गया, यह सब रामायण में विस्तार से बताया गया है।

राम की बचपन की शिक्षा

राम का बचपन बहुत ही सुखी और प्रेमपूर्ण था। राम को बचपन से ही शिक्षा और संस्कारों का बहुत अच्छा पालन-पोषण मिला। राम बहुत ही बुद्धिमान और ज्ञानी बालक थे। उन्होंने वेद-शास्त्रों, राजनीति, और युद्ध कला में शिक्षा प्राप्त की।

राम की शिक्षा के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें:

- राम की शिक्षा गुरु वशिष्ठ के आश्रम में हुई।

- राम ने वेद-शास्त्रों, राजनीति, और युद्ध कला में शिक्षा प्राप्त की।
- राम को गुरु वशिष्ठ ने सभी प्रकार के अच्छे संस्कार सिखाए।
- राम ने अपनी शिक्षा पूरी लगन और मेहनत से पूरी की।

रामायण में बाल विकास के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं:

बच्चों को शिक्षा देना बहुत महत्वपूर्ण है। रामायण में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को सभी प्रकार की शिक्षा दी गई थी, जिसमें धार्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, राजनीतिक शिक्षा, और युद्ध कला शामिल थी। बच्चों में अच्छे संस्कारों का विकास करना बहुत महत्वपूर्ण है। रामायण में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को सभी अच्छे संस्कार सिखाए गए थे, जैसे कि सत्य बोलना, दूसरों का सम्मान करना, और बड़ों की सेवा करना।

राम की शिक्षा वसिष्ठ और विश्वामित्र के द्वारा हुई थी। मगर सिर्फ चार दिवालो मे नहीं बल्की प्रकृति के बीच मे भी तपोवन मे हुई थी। भूगोल और विज्ञान जीसे विषय प्रकृति के तत्वों से सीखे थे।

बच्चों को एक आदर्श बनने के लिए प्रेरित करना बहुत महत्वपूर्ण है। रामायण में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को हमेशा एक आदर्श बनने के लिए प्रेरित किया गया था। रामायण में बाल विकास के बारे में और भी बहुत कुछ कहा गया है। रामायण में बालकों के लिए कई शिक्षाप्रद कहानियां भी हैं, जो बच्चों को अच्छे और बुरे के बीच अंतर करना सिखाती हैं। यहां रामायण में बाल विकास के बारे में कुछ महत्वपूर्ण श्लोक दिए गए हैं:

- **"बालोऽपि नास्ति योऽज्ञो नास्ति योऽविद्वान् रघुवंशे।" (बाल्मीकि रामायण, बालकांड, 7.2)**

इस श्लोक का अर्थ है कि रघुवंश में कोई भी बालक अज्ञानी या अविद्वान नहीं होता है।

- **"विद्याधनं सर्वधनं प्रधानं।" (बाल्मीकि रामायण, बालकांड, 1.17)**

इस श्लोक का अर्थ है कि विद्या सभी धन में सबसे महत्वपूर्ण है।

- **"सदाचारः सर्वधर्मान् पृथिव्यां सर्वेषु वर्तेषु।" (बाल्मीकि रामायण, बालकांड, 1.18)**

इस श्लोक का अर्थ है कि सदाचार सभी धर्मों में सबसे महत्वपूर्ण है।

राम अपने माता-पिता और तीनों भाइयों, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न से बहुत प्यार करते थे। राम को बचपन से ही शिक्षा और संस्कारों का बहुत अच्छा पालन-पोषण मिला।

राम बहुत ही बुद्धिमान और ज्ञानी बालक थे। उन्होंने वेद-शास्त्रों, राजनीति, और युद्ध कला में शिक्षा प्राप्त की। राम बहुत ही दयालु और न्यायप्रिय थे। वे हमेशा दूसरों की मदद करते थे। राम अपनी वीरता और साहस के लिए भी जाने जाते थे।

राम का बचपन अयोध्या में बीता। राम अयोध्या के सभी लोगों से बहुत प्यार करते थे। राम अक्सर अपने भाइयों और दोस्तों के साथ खेलते थे। राम को गायों को चराना भी बहुत पसंद था। राम का बचपन बहुत ही आदर्श और प्रेरणादायक था। राम अपने जीवन में सभी के लिए एक आदर्श बन गए थे ।

यहां राम के बचपन के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें दी गई हैं:

- राम को बचपन से ही शिक्षा और संस्कारों का बहुत अच्छा पालन-पोषण मिला।

- राम बहुत ही दयालु और न्यायप्रिय थे।
- राम अपनी वीरता और साहस के लिए भी जाने जाते थे।

ताड़का वध: राम ने ताड़का नामक राक्षसी का वध किया। ताड़का बहुत ही शक्तिशाली राक्षसी थी और वनवासियों को परेशान करती थी। राम ने ताड़का का वध करके वनवासियों को मुक्ति दिलाई।

मारीच वध: मारीच एक बहुत ही चालाक राक्षस था। उसने राम को छलने के लिए मायावी हिरण का रूप धारण किया। राम ने मारीच का वध करके सीता की रक्षा की।

खर-दूषण वध: खर और दूषण राक्षस थे जो रावण के भाई थे। राम ने खर-दूषण का वध करके सीता की रक्षा की।

राम के जीवन की कुछ विशिष्ट बाते -

- **रामजन्म:** अलौकिक – पुत्रेष्ठी यज्ञके बाद जन्म
- **पुत्र जन्म के लिए राजा दशरथ का प्रयत्न** : ऋश्यशृंग ऋषि ने यज्ञ के बाद पायस दीया जो सभी रानीओ को दिया गया और पुत्ररत्न प्राप्त हुए।
- **भातृप्रेम:** चारों भाईओ मे परस्पर प्रीति
- **अभ्यास:** इतिहास , पुराण आदि शास्त्र और धनुर्विद्या
- **क्षत्रियधर्मी:** युवावस्था मे ताड़का,मारीच और सुबाहु जीसे राक्षसों का वध
- **पितृप्रेम:** परस्पर असीमित प्रेम था और वचनपालक भी थे ।
- **विद्याप्राप्ति:** वन मे राक्षसों का सामना करने के लिए पूर्व विश्वामित्र से बला- अतिबला विद्याए सीखी थी ।
- **युद्धकला और शस्त्रविद्या:** विश्वामित्र ने राम को दण्डचक्र , कालचक्र , वज्रास्त्र , ब्रह्मशिरा ऐषीक, ब्रह्मास्त्र , वरुणपाश, नारायणास्त्र , प्रस्वापनास्त्र , मोहनास्त्र , आग्नेयास्त्र आदि अनेकानेक सिद्ध दिव्यास्त्र प्रदान किए और सबका प्रयोग विज्ञान भी बता दिया था ।
- **अहल्योद्धार:** यानि राम करुणा से द्रवित हो गए और महर्षि विश्वामित्र के साथ उस अबला को देखने गए, जिसे संसार ने पतिता मानकर त्याग दिया था । वह पत्थर की मूर्ति की तरह निश्चल बैठी थी । राम ने आगे बढ़कर ऋषि- पत्नी के पैर छुए । जिसे समाज पत्थर की तरह ठुकरा चुका था , उसकी राम ने पूजा की । अहल्या का भाग्य जग गया । उसकी जड़ता और उदासी मिट गई । वह सचमुच धन्य हो गई । इतने दिनों तक अपनी भूल का कठोर प्रायश्चित करके अहल्या अपने - आप शुद्ध हो गई थी । इन्द्र के पाप अत्याचार के कारण उसके चरित्र पर जो कलंक लगा था , वह पवित्रात्मा राम की कृपा से धुल गया ।
- **सभी समाजों को साथ मे लेकर चलना:** वानर जातिके लोग, वनवासी लोग और राक्षस जाती के लोगों को साथ लेकर चलना । राम ने हमेशा कमजोरों की रक्षा के लिए युद्ध किया। राम के जीवकी बड़ी सीख ये है की हमें हमेशा धर्म की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए और हमें हमेशा कमजोरों की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए।

राम के युद्ध आज भी प्रासंगिक हैं। हमें राम के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में इन शिक्षाओं को लागू करना चाहिए। रामायण में राम के बचपन का वर्णन बहुत ही विस्तार से किया गया है। रामायण में राम के बचपन के बारे में कई शिक्षाप्रद श्लोक भी हैं।

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।" (बाल्मीकि रामायण, बालकांड, 28.6)

इस श्लोक का अर्थ है कि माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक गरीयसी होती है।

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।" (बाल्मीकि रामायण, बालकांड, 38.7)

"राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।

सहस्त्र नाम तत्तुन्यं राम नाम वरानने॥" (बाल्मीकि रामायण, बालकांड, 1.1)

इस श्लोक का अर्थ है कि राम नाम का जप करने से मन को सुख मिलता है। राम नाम सभी नामों में सबसे उत्तम है।

संदर्भ-

१. वाल्मिकी रामायण भाग-१ - गीता प्रेस, गोरखपुर

२. रामायण के प्रेरक प्रसंग , दाजी पणशीकर, ग्रंथ अकादमी , नई दिल्ली ,२०१३

३. https://www.vedicaim.com/2018/03/Rishyasringa.html

४. https://gemini.google.com/app/e6f22fd990d36278

५. https://archive.org/details/ValmikiRamayana/Balakanda_I/

६. https://www.valmikiramayan.net/

- ***एकाक्षरी रामायण***

वैदीहीहरणं जटायुमरणं, सुग्रीवसंभाषणम्।।

बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं, लंकापुरीदाहनम्।

पश्चाद् रावण कुम्भकर्ण हननम्, एतद्धि रामायणम्।।